B.A. PART-1

हिन्दी (प्रतिष्ठा) प्रथम-पत्र

हिन्दी साहित्य का इतिहास

भाग-2

प्रश्न :- परवर्ती साहित्य पर आदिकाल के प्रभाव को बताये।

उत्तर :- शेष भाग :-

सिद्धों एवं नाथों ने परवर्ती सन्त साहित्य को अनेक रूपों में प्रभावित किया। कबीर के काव्य में उपलब्ध रहस्यवाद पर सिद्धों एवं नाथों का पर्याप्त प्रभाव है। कबीर के काव्य में प्रयुक्त शब्दावली- नाद, बिन्दु, शून्य, महा, पिंगला, सुषुम्ना, गगन गुफा, अनहद आदि नाथपंथियों से लिये गये हैं। सिद्ध साहित्य में प्रयुक्त शब्दावली से कबीर की उलटबासियाँ प्रभावित हैं। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य की भूमिका में इस संबंध में अपना मत व्यक्त करते हुए कहा है, "कबीर आदि निर्गुण मतवादी सन्तों की बाणियों की बाहरी रूपरेखा पर विचार किया जाय तो मालूम होगा कि यह सम्पूर्णतः भारतीय हैं और बौद्ध धर्म के अन्तिम सिद्धों और नाथपंथी योगियों के पदादि से उसका सीधा सँबंध है।"

कबीर ने जाति-पांति का जो विरोध अपने काव्य में किया वह सिद्धों का ही प्रभाव है। सहजयानी सिद्ध सरहपा ने जाति-पाँति का विरोध अपनी रचनाओं में किया है। कबीर का अक्खड़पन भी सिद्धों की देन है। आडम्बर एवं पाखण्ड का तीखा खण्डन कबीर ने किया, वैसा ही सिद्धों में भी उपलब्ध होता है। सिद्धों की रहस्यपूर्ण अभिव्यंजना प्रणाली ने भी कबीर काव्य को प्रभावित किया। कबीर और सरहपा के काव्य की समानता निम्न पंक्तियों में देखी जा सकती है—

पंडिअ सअल सत्य बक्खाणई।
देहहिं बुद्ध बसन्त न जाणई॥
पढ़ि-पढ़ि पंडित वेद बखानै।
भीतर हुती बसत न जानै॥

कहीं-कहीं कबीर की उलटबासियां सिद्ध-काव्य से अद्भुत समता रखती हैं। जैसे —

बलद बिआअल गविआ बांझे।
पिरा दुहिए ए तिना सांझे ।।
बैल बिआय गाय भई बाँझ।
बछरा दूहै तीन्यूँ साँझ ।।

इस सम्बन्ध में आचार्य परशुराम चतुर्वेदी का मत है — "कबीर साहब की रचनाओं के अन्तर्गत बहुत से सिद्धों के दोहे अथवा चर्यापदों में आये हुए वाक्यांशों तथा मुहावरों के भी अनुवाद प्रायः ज्यों के त्यों मिलते हैं।"

कबीर के काव्य पर नाथपंथियों का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा। गुरु की महत्ता जितनी नाथ पंथ में है, उतनी ही कबीर में। गोरखनाथ के योगमार्ग में गुरु की बड़ी महिमा गाई गयी है। कबीर काव्य में प्रयुक्त 'अवधू' (अवधूत) शब्द भी नाथपंथियों से लिया गया है। गोरखनाथ ने कोरे शास्त्र-ज्ञान का उपहास किया है तो कबीर ने कहा —

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय ।।

बाह्याचारों का खण्डन, नादबिन्दु की अवधारणा, षट्चक्र हठयोग साधना, निरंजन, शून्य आदि भी कबीर ने नाथपंथियों से ग्रहण किये हैं।

उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आदिकालीन हिन्दी साहित्य ने परवर्ती हिन्दी साहित्य को अनेक रूपों में प्रभावित किया है।

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

(1) प्रश्न:- आदिकालीन हिन्दी साहित्य का परवर्ती हिन्दी साहित्य पर जो प्रभाव पड़ा, उसे स्पष्ट कीजिए?

(2) प्रश्न :- परवर्ती हिन्दी साहित्य को आदिकालीन साहित्य की देन विषय पर अपने विचार व्यक्त करें?

(3) प्रश्न :- कबीर पर सिद्धों एवं नाथों का प्रभाव विषय पर एक संक्षिप्त निबंध लिखें?

(4) प्रश्न :- टिप्पणी लिखिए - परवर्ती हिन्दी साहित्य पर आदिकाल का प्रभाव?

पता
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.A.C) (B.R.A.B.U. M)
मो० नं० - 7909046087
दिनांक - 22.02.2022